

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 7, सत्य की ओर वापसी, महिला प्रचारक

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 7 है, सत्य की ओर वापस लौटना, महिला प्रचारक।

आज का हमारा उपदेश सत्य की ओर वापस लौटना कहलाता है, और यह वाल्डेन्सियन महिलाओं और विश्वास में उनकी भूमिका का अनुसरण करता है।

निश्चित रूप से, वाल्डो के मंत्रालय की शुरुआत में, बारहवीं शताब्दी में पुरुषों और महिलाओं ने प्रचार किया। ऐसा क्यों है, और महिलाओं द्वारा नेतृत्व की भूमिका निभाने की समझ के लिए हमें धर्मशास्त्र से आधार कहाँ मिलता है? बहुत शुरुआती चर्च में भी, वाल्डेन्सियन ने कई अंशों को देखा, और मैं अब उनमें से दो को आपके सामने पढ़ने जा रहा हूँ। मार्क 16 से, जब सप्त खत्म हो गया, तो मरियम मगदलीनी, याकूब की माँ मरियम और सलोमी ने मसाले लाए ताकि वे जाकर उसका अभिषेक कर सकें।

सप्ताह के पहले दिन सुबह-सुबह, जब सूरज उग आया था, वे कब्र के पास गए। वे एक-दूसरे से पूछ रहे थे कि कब्र के द्वार से हमारे लिए पत्थर कौन हटाएगा? जब उन्होंने ऊपर देखा, तो उन्होंने देखा कि पत्थर, जो बहुत बड़ा था, पहले से ही लुढ़का हुआ था। जब वे कब्र में गए, तो उन्होंने देखा कि एक जवान आदमी सफेद वस्त्र पहने हुए दाहिनी ओर बैठा है, और वे घबरा गए।

उस ने उन से कहा, घबराओ मत, तुम यीशु नासरी को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढते हो। वह जी उठा है, और यहां नहीं है। देखो, वह एक जगह है जहां उन्होंने उसे रखा है।

परन्तु जाकर उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम्हारे आगे गलील को जाएगा। वहां तुम उसे देखोगे, जैसा उस ने तुम से कहा था। तब वे निकलकर कब्र से भाग गए, क्योंकि उन पर भय और विस्मय छा गया था।

और उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे डरे हुए थे। और यह सब उन्हें आज्ञा दी गई थी, उन्होंने संक्षेप में पतरस के आस-पास के लोगों को बताया। और उसके बाद, यीशु ने स्वयं उनके द्वारा पूर्व से पश्चिम तक अनन्त उद्धार की पवित्र और अविनाशी घोषणा भेजी।

सप्ताह के पहले दिन भोर को जब वह उठा, तो पहिले पहिले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया, जिसमें से उस ने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं। उस ने बाहर जाकर उन लोगों को जो उस समय उसके साथ थे, विलाप करते और रोते हुए समाचार दिया। परन्तु जब उन्होंने सुना कि वह जीवित है और उस ने उसे देखा है, तो विश्वास न किया।

तो, उस शास्त्र में ध्यान इस बात पर है कि यीशु ने मरियम से कहा कि जाओ और मेरे भाइयों को बताओ। और निश्चित रूप से, लूका के अंश में, हम देखते हैं कि यीशु अपने अनुयायी, मरियम मगदलीनी को यह कहते हुए प्रोत्साहित कर रहे हैं कि जाओ और बताओ। लेकिन फिर हम गलातियों 3, 23 से 29 पर जाते हैं।

अब, विश्वास के आने से पहले, हम व्यवस्था के अधीन कैद थे और विश्वास के प्रकट होने तक पहरेदार थे। इसलिए, व्यवस्था मसीह के आने तक हमारा अनुशासक थी ताकि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। लेकिन अब जब विश्वास आ गया है, तो हम अब किसी अनुशासक के अधीन नहीं हैं।

क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में विश्वास करने से परमेश्वर की सन्तान हो, अर्थात् तुम में से बहुतों ने जो मसीह में बपतिस्मा लिया है, मसीह को पहिन लिया है। इसलिये अब न कोई यहूदी रहा, न यूनानी, न कोई दास, न स्वतंत्र, न कोई नर, न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

और यदि तुम मसीह के हो, तो तुम अब्राहम की संतान हो, प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस हो। यह प्रभु का वचन है। हालाँकि वाल्डेन्सियन महिलाओं ने 50 से अधिक वर्षों तक खुले तौर पर प्रचार किया, 13वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक, रोमन चर्च द्वारा वाल्डेन्सियन महिलाओं के खिलाफ हिंसक उत्पीड़न के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, उन्होंने ऐसी भूमिकाएँ निभानी शुरू कर दीं जो बाहरी दुनिया के लिए कम दिखाई देती थीं, लेकिन शिष्यों के समुदाय के रूप में उनके विश्वास के जीवन के लिए हर तरह से आवश्यक थीं।

सोरोरेस [बहन के लिए लैटिन] नामक समूहों में, जिनसे हम सोरोरिटी शब्द को पहचानते हैं, महिला वाल्डेन्सियन शिष्यत्व के फोकस ने महत्वपूर्ण बदलाव किए। सोरोरेस, जिसे हम वाल्डेन्सियन बहनचारा कह सकते हैं, ने वाल्डेन्सियन समुदाय के भीतर धर्मशालाओं के एक नेटवर्क की स्थापना के आसपास अपने मंत्रालय को फिर से केंद्रित करना शुरू कर दिया। इन धर्मशालाओं को गरीबों, बीमारों और दरिद्र महिलाओं को आतिथ्य प्रदान करने के अभ्यास के लिए महिलाओं द्वारा चलाया और प्रबंधित किया जाता था।

समय के साथ, इनमें से कई धर्मशालाओं में, सोरोरेस ने घुमंतू वाल्डेन्सियन पादरियों, बारबा की तैयारी के लिए आवास प्रदान करना शुरू कर दिया, और वाल्डेन्सियन सेमिनरी और स्कूलों के अग्रदूत बनने की शुरुआत की। सोरोरेस शीर्षक ने पुरुषों के साथ महिलाओं की समान भागीदारी की भूमिका को व्यक्त किया, जिन्हें सुसमाचार फैलाने के अधिक दृश्यमान आह्वान का प्रभार दिया गया था। सोरोरेस के संगठन में सन्निहित यह भागीदारी भूमिका वाल्डेन्सियन आस्था के समुदाय की गवाही के लिए अपरिहार्य थी और जब तक वाल्डेन्सियन मिशनरी और पूरे यूरोप में दो की टीमों में पादरी भेजने की इंजील प्रणाली बनी रही, तब तक यह महत्वपूर्ण रही।

हालाँकि, 16वीं शताब्दी में सुधार के आने के साथ, प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म में इसके द्वारा लाए गए क्रांतिकारी परिवर्तन और वाल्डेन्सियनों के मंत्रालय पर जोर नाटकीय रूप से सुसमाचार प्रचार के एक भ्रमणशील रूप से बदलकर भौगोलिक रूप से निश्चित समुदायों और पूजा के घरों में पादरी के रूप में सेवा करने लगा। इसके अलावा, सुधार आंदोलन में शामिल होने के तुरंत बाद, वाल्डेन्सियन प्रचारकों को अब वाल्डेन्सियन सेमिनरी में प्रशिक्षित नहीं किया गया, बल्कि जिनेवा,

स्विट्जरलैंड में स्कूल और सेमिनरी में जाना पड़ा। परिणामस्वरूप, सोरोरेस का मंत्रालय और वाल्डेन्सियन भ्रमणशील प्रचारकों, बारबा का समर्थन और प्रशिक्षण, महत्व में फीका पड़ गया।

वर्तमान वाल्डेन्सियन फोकस में सोरोरेस के प्रभाव के धागे पाते हैं, जो अपने बच्चों और नागरिकों की शिक्षा के महत्व, फॉरेस्टरिया की स्थापना, जो वाल्डेन्सियन आतिथ्य गृह हैं, और समाज में गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों के लिए मंत्रालय पर उनका ध्यान केंद्रित करते हैं। वाल्डेन्सियन मंत्रालय के इन सभी घटकों का पता सोरोरेस के मंत्रालय के जोर से लगाया जा सकता है। आधुनिक शब्दों में, जिसे हम आज चर्च में इसे डायकॉनल मंत्रालय कहेंगे।

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, अब हम 1940 के दशक के उत्तरार्ध की ओर मुड़ते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के समापन के तुरंत बाद, वाल्डेन्सियन चर्च पर नए और गतिशील परिवर्तन होने लगे। पहला परिवर्तन समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका थी, मुख्य रूप से गृहिणी के रूप में सेवा करने से लेकर काम और पेशेवर दुनिया में प्रवेश करने तक और पारंपरिक रूप से पुरुषों के काम के रूप में परिभाषित किए जाने वाले व्यवसायों तक।

वाल्डेन्सियन चर्च को प्रभावित करने वाला दूसरा बड़ा बदलाव पादरी के रूप में सेवा करने में रुचि रखने वाले पुरुषों की महत्वपूर्ण कमी थी। 1948 तक, ये मुद्दे हर अगस्त में आयोजित वाल्डेन्सियन धर्मसभा की बैठक में संबोधित किए जाने वाले विषय बन गए। नतीजतन, टैवोला वाल्डेस, जो वाल्डेन्सियन चर्च का प्रशासनिक बोर्ड है, जो प्रेस्बिटेरियन चर्च की आम सभा के समान है, को पहली बार पादरी के रूप में महिला व्यवसाय के मुद्दे का अध्ययन करने के लिए बुलाया गया था।

अध्ययन के इन शुरुआती दिनों के दस्तावेजों से पता चलता है कि शोध करने वाले पुरुषों में पक्षपात था। उनका ध्यान मंत्रालय में पुरुषों और महिलाओं की समानता पर नहीं था, बल्कि उन विशेष उपहारों की खोज पर था जो महिलाएँ कुछ प्रकार के मंत्रालयिक कार्यों में लाती हैं। रोम में वाल्डेन्सियन सेमिनरी के प्रोफेसर जियोवानी मीगे को तीन पुरुषों की अध्ययन टीम का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया गया था, जिन्हें इन तीन विशेष मुद्दों को संबोधित करने का निर्देश दिया गया था: सहायक मंत्रालय, महिला मंत्रालय, और वाल्डेन्सियन चर्च के शासक निकायों में महिलाओं की भागीदारी।

इस बहस के पहले ग्यारह वर्षों में, धर्मसभा और लेखन में महिलाओं की भूमिका के बजाय स्त्री मंत्रालयों पर जोर दिया गया। यह अंतर थोड़ा अस्पष्ट लग सकता है, लेकिन जोर देने से एक पूर्वाग्रह को बल मिलता है जो मंत्रालय के कुछ कम महत्वपूर्ण कार्यों को वर्गीकृत करता है, जैसे कि संडे स्कूल, युवा गतिविधियों, महिला समूहों, मुलाकात मंत्रालयों और महिला चर्च कार्यकर्ताओं के लिए कुछ प्रशासन की देखरेख करना। दूसरी ओर, पुरुष नियुक्त पादरी थे, जो सुसमाचार का प्रचार करते थे, संस्कारों का प्रशासन करते थे और चर्च के प्रमुख निर्णयों में शामिल होते थे।

बेशक, श्रम का यह विभाजन केवल वाल्डेन्सियन चर्चों में से सबसे बड़े चर्च में ही संभव हो सकता था। इस विवाद के केंद्र में मनमाने ढंग से अधिकांश वाल्डेन्सियन चर्चों में महिलाओं की सेवा

करने की संभावना को खारिज कर दिया गया क्योंकि वे दूसरे पेशेवर कर्मचारी को सहारा देने के लिए बहुत छोटे थे। 1954 तक, वाल्डेन्सियन धर्मसभा ने चर्च सहायकों की भूमिका को अपनाया और स्थापित किया, जो महिलाएँ पुरुष पादरी के साथ मिलकर विजिटिंग मिनिस्ट्री, धार्मिक शिक्षा और महिला मंत्रालय का काम कर सकती थीं।

मंत्रालय में महिलाओं की भूमिका को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक पूर्वाग्रह के कारण, चर्चा का ध्यान नियुक्त मंत्रालय में महिलाओं की भूमिका से हटकर चर्च में महिलाओं की भूमिका के अधिक प्रबंधनीय विषय पर चला गया, जैसा कि अभी वर्णित है, जिसमें बड़े वाल्डेन्सियन चर्चों में सेवा करने में सहायक महिला सहायकों की भूमिका पर जोर दिया गया। ध्यान रखें, 1940 और 50 के दशक के अंत में, अमेरिका में मुख्य ईसाई धर्म के भीतर भी यही राय व्यापक रूप से रखी गई थी। इस जोर ने 1950 के दशक में नियुक्त मंत्रालय में महिलाओं की भूमिका से सभी चर्चाओं को हटा दिया। दस वर्षों तक, इस मुद्दे पर इटली के टोरे पेलिसी में धर्मसभा के मंच पर चर्चा की गई, जिसे हर अगस्त में पुरुष पादरी और बुजुर्गों के एक समूह द्वारा आयोजित किया जाता है।

उपहारों के खिलाफ़ रूढ़िवादी तर्क अक्सर उठाए जाते थे और उन्हें चुनौती नहीं दी जाती थी क्योंकि केवल पुरुष ही बोलते थे, भले ही बहस को देखने के लिए कोई दुर्लभ महिला मौजूद होती थी। 50 के दशक के अंत में, एक धर्मसभा की बैठक में, आठ महिलाएँ उपस्थित थीं। वे सुनने के लिए आईं, लेकिन पुरुष चर्च नेताओं द्वारा कुछ आग्रह के बाद कि वे बहस में अपना वजन डालें, दो महिलाओं ने झिझकते हुए और डरपोक होकर बात की।

अचानक से, यह सभी उपस्थित लोगों के लिए स्पष्ट था कि बहस किए जा रहे मामलों पर कोई संगठित और स्पष्ट महिला दृष्टिकोण नहीं था। इस मामले पर एक सुविकसित स्थिति की आवश्यकता थी, जिसमें आम तौर पर महिलाओं के दृष्टिकोण पर सहमति व्यक्त की गई हो। 1949 की शुरुआत में, प्रोफेसर मीगे ने लिखा कि उन्होंने गलातियों 328 और इसके संदर्भ को पहचाना, मसीह में अब कोई पुरुष या महिला नहीं है, समानता के एक अंतर्निहित सिद्धांत के रूप में जो सुसमाचार की भावना का स्पष्ट उच्चारण करता है।

मीगे ने अपनी 1949 की रिपोर्ट में निष्कर्ष निकाला कि चर्च को महिलाओं की सेवा के बारे में हमारी समझ को समायोजित करने का पूरा अधिकार है, भले ही यह उसका कर्तव्य न हो, गलातियों 328 में समानता के पूर्ण सिद्धांत को आगे बढ़ाते हुए। मीगे पॉल के इस पत्र को पॉल के धर्मशास्त्र के केंद्र के रूप में देखने में सही थे। गलातियों में, पॉल एक बपतिस्मा सूत्र का संचार करता है जिसे सभी अपने बपतिस्मा के समय प्राप्त करते हैं। यह मसीह में ईश्वर की नई रचना की छवि है, एक नई रचना जहाँ एकता सामाजिक विभाजन को बदल देती है।

पॉल के अपने शब्दों में, मसीह में न तो कोई नर है और न ही कोई नारी, न कोई यहूदी है और न ही कोई यूनानी, न ही कोई गुलाम है और न ही कोई स्वतंत्र। यदि आपको मसीह में विश्वास है, तो आप मसीह में निहित हैं और परमेश्वर के बच्चों के रूप में, वाचा के वारिस के रूप में मसीह के हैं। मसीह की नई सृष्टि में, लिंग भूमिकाएँ अब लागू नहीं होती हैं।

मसीह के समुदाय में, आस्था ही पहचान का कारक है। यदि हम मसीह में हैं, तो हम सभी एक नई रचना हैं, और हमारी पहचान वाचा के बच्चों के बराबर है। एक दशक के अध्ययन के बाद, 1950 के दशक के अंत तक, प्रोफेसर मीगे ने महिलाओं के समन्वय के इस कठिन मुद्दे को विभिन्न कोणों से खोजा था, जिसमें बाइबिल, धर्मशास्त्र, ऐतिहासिक रूप से और पूरे यूरोप में कुछ चर्चों के अनुभव के आधार पर शामिल थे, जिनमें नेतृत्व की विभिन्न भूमिकाओं में महिलाएँ थीं।

मीगे ने अंततः चर्च से आग्रह किया कि वे अनुभव के आधार पर मंत्रालय में महिलाओं के निहितार्थों की खोज करने और प्रयोग करने का प्रयास करें। इसलिए 1959 में, वाल्डेन्सियन चर्च के शासी निकाय, टैबोला ने सुश्री कारमेन ट्रोबिया को यह जिम्मेदारी सौंपी। सीटरोनी, जो खुद एक सहायक चर्च कार्यकर्ता हैं, रोम में सेमिनरी में शिक्षित हैं, और गर्मियों के महीनों में चर्च की पूरी जिम्मेदारी संभालती हैं। मण्डली और सुश्री ट्रोबिया के लिए यह सकारात्मक अनुभव महिलाओं को नियुक्त मंत्रालय में शामिल करने के विचार पर बहस को आगे बढ़ाने के लिए एक आधार रेखा के रूप में काम आया।

1960 में, अगस्त के दौरान धर्मसभा की बैठक से पहले वाल्डेन्सियन महिला संघ की एक कांग्रेस आयोजित की गई थी। कुछ दिनों बाद, जब धर्मसभा बुलाई गई, तो धर्मसभा ने महिलाओं से पहली आधिकारिक राय सुनी, जिसमें नियुक्त मंत्रालय में महिलाओं की भूमिका की प्रभावी रूप से वकालत की गई। लेकिन इस प्रस्तुति के साथ, उस वर्ष इस बारे में एक गंभीर बहस हुई कि क्या वाल्डेन्सियन चर्च को अभी भी एक नियुक्त मंत्री की भूमिका की आवश्यकता है।

इन दोनों मुद्दों के संयोजन ने पादरी के लिए आवश्यक गुणों के बारे में एक गंभीर चर्चा को जन्म दिया। 1960 से 1962 तक, चर्चा धर्मसभा के मंच से आगे बढ़कर इटली में पूरे संप्रदाय के स्थानीय चर्चों में वाल्डेन्सियनों की राय को शामिल करने लगी। जब 1962 में धर्मसभा बुलाई गई, तो स्थानीय चर्चों में बहस से कई तरह की आपत्तियाँ उठाई गईं, लेकिन तबोला ने उनका समाधान किया।

एक महत्वपूर्ण आपत्ति इस चिंता पर आधारित थी कि महिलाओं को आत्माओं की देखभाल में पुरुषों पर अधिकार प्राप्त होगा। 13 वर्षों से इन मामलों का अध्ययन कर रहे तबोला ने इस चिंता को संबोधित करते हुए कहा कि एक मंत्री का अधिकार किसी के लिंग या व्यक्तित्व के बजाय शास्त्र के अधिकार और मंत्रालय के कार्यालय का प्रयोग करने से आता है। आपत्ति को निरस्त कर दिया गया।

चर्च के भीतर उठाई गई दूसरी चिंता यह थी कि सामाजिक और जीवनशैली कारणों से एक महिला के लिए मंत्री के पद की भारी जिम्मेदारियों को संभालना मुश्किल होगा। तबोला ने जवाब दिया कि मंत्रालय के लिए बुलाए गए पुरुषों को भी इसी तरह की कठिनाइयों और विकल्पों का सामना करना पड़ता है। तीसरी चिंता पादरी की भूमिका निभाने में महिलाओं के मर्दानाकरण की थी, और इसका जवाब इस मान्यता से दिया गया कि चर्चों को अपने मंत्रालय को पादरी के हाथों में केंद्रित नहीं करना चाहिए, बल्कि सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व को मूर्त रूप देने में चर्च की सदस्यता को अधिक प्रभावी ढंग से शामिल करना चाहिए।

उठाई गई अंतिम आपत्ति आर्थिक प्रकृति की थी। यह सोचते हुए कि पुरुष और महिलाएं नियुक्त नेतृत्व पदों के लिए प्रतिस्पर्धा में होंगे, तबोला की प्रतिक्रिया विशेष रूप से दिलचस्प है। ऐसा मत मानिए कि महिलाओं के लिए पादरी का पद खोलने से मंत्रियों की संख्या में वृद्धि होगी।

उन्होंने 1962 में लिखा था कि हम इस बात से आश्चस्त हैं कि महिला पादरी हमेशा अल्पमत में रहेंगी। धर्मसभा की बैठक में इन सभी चिंताओं को संबोधित करने के बाद, वाल्डेन्सियन चर्च ने महिलाओं के समन्वय के लिए दरवाजे खोलने के लिए बहुमत से मतदान किया। अगस्त 1967 में, सुश्री कारमेन ट्रोबिया सहित पहली दो सेमिनरी-प्रशिक्षित महिला वाल्डेन्सियन पादरियों को नियुक्त किया गया और उन्होंने चर्चों की सेवा शुरू की।

इतिहास की उन पंक्तियों को जोड़ते हुए, जो मैंने पढ़े गए दस्तावेजों में स्पष्ट नहीं की गई थीं, मैं आश्चर्यचकित था कि प्रोफेसर मीगे ने वाल्डेन्सियन आंदोलन के शुरुआती दशकों में महिलाओं की भूमिका को महिलाओं के समन्वय के औचित्य के रूप में क्यों नहीं इंगित किया। हालाँकि, मुझे पता चला कि 1962 तक प्राचीन चर्च का पहला अध्ययन नहीं किया गया था। इसलिए, यह तथ्य कि 12वीं शताब्दी के अंत और 13वीं शताब्दी की शुरुआत में महिलाएँ प्रचार कर रही थीं, हाल के दशकों तक चर्च के नेतृत्व द्वारा स्पष्ट रूप से अज्ञात था।

पूरी संभावना है कि 1961 में पूरा वाल्डेन्सियन समुदाय अपनी विरासत के इस गौरवपूर्ण तथ्य से अनभिज्ञ था। वाल्डेन्सियन महिलाओं पर विषयगत शोध आज भी अपेक्षाकृत कम खोजे गए विद्वानों का अध्ययन है। इस अपेक्षाकृत अज्ञात इतिहास पर विचार करने से दो बातें ध्यान में आती हैं।

सबसे पहले, पहली पीढ़ी के वाल्डेन्सियन पवित्र शास्त्र के पालन और अभ्यास में कितने मौलिक रूप से निर्देशित थे, इस हद तक कि उन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च को खुले तौर पर चुनौती देने की हिम्मत की, जब उन्होंने खुद के लिए शास्त्र की व्याख्या की थी। दूसरे, मैं इस बात से चकित हूँ कि वाल्डेन्सियन पुरुषों और महिलाओं की पहली पीढ़ी के विश्वास की गतिशील गवाही को समझने में बाइबिल के विद्वानों और चर्च के नेताओं को कितना समय लगा। आठ सौ साल बाद, हमने सुसमाचार के इस संदेश के लिए उसी प्रगतिशील और आस्था-आधारित अभिविन्यास को अपनाया है जिसे हमारे पूर्वजों ने बहुत पहले मान्यता दी थी।

इस संबंध में, ईश्वर का सत्य पूर्ण चक्र में आ गया है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर। यह महिला प्रचारकों पर उपदेश और महिला प्रचारकों के प्रति मध्ययुगीन चर्च की प्रतिक्रिया का एक सिलसिला है, जिसका शीर्षक है अवमानना से दबा हुआ।

बारहवीं शताब्दी की शुरुआत में, महिला वाल्डेन्सियनों ने मैरी मैग्डलीन, भविष्यवक्ता अन्ना और प्रिस्किल्ला और डोरकास जैसी अन्य शुरुआती महिला शिष्यों के बाइबिल गवाहों से सुसमाचार का प्रचार करने का औचित्य पाया। 1180 की शुरुआत में ही महिलाएँ सार्वजनिक स्थानों पर सुसमाचार का प्रचार कर रही थीं। यह बहुत संभव है कि वे उससे पहले भी प्रचार कर रही थीं, लेकिन 1180 में यही वह तारीख थी जब कैथोलिक बिशप बर्नार्ड ऑफ़ क्लेरवॉक्स के सचिव, ऑक्सरे के जेफ्री ने फ्रांसीसी शहर क्लेरमोंट के भीतर प्रचार करने और बिशप बर्नार्ड ऑफ़

क्लेरवॉक्स पर सार्वजनिक रूप से अपमान करने के लिए दो वाल्डेन्सियन महिलाओं की निंदा करते हुए एक रिपोर्ट लिखी थी।

इन दोनों महिलाओं को विधर्मी करार दिया गया और बाद में उन्हें वेश्या करार दिया गया। जब बारहवीं सदी के अंत और तेरहवीं सदी की शुरुआत में पुरुष और महिला वाल्डेन्सियन प्रचार करते थे, तो उनका संदेश सीधा-सादा होता था। वे अक्सर लोगों की भाषा में अनुवादित धर्मग्रंथों का पाठ करते थे और लोगों को सार्वजनिक रूप से पाप की निंदा करने और अपनी गलतियों का पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करते थे।

बारहवीं शताब्दी से शुरू होने वाले रोमन चर्च द्वारा और उसके लिए लिखी गई ढेरों औपचारिक रिपोर्टों के अनुसार, इस बुनियादी स्तर की घोषणा को भी रोमन चर्च द्वारा एक गंभीर और महत्वपूर्ण खतरे के रूप में व्याख्यायित किया गया था। अगले पचास वर्षों में इन रिपोर्टों की मात्रा में काफी वृद्धि हुई। ऑक्सरे के जेफ्री ने वाल्डेन्सियन समुदाय के भीतर महिला प्रचारकों का व्यंग्य किया, उन्हें रहस्योद्घाटन की पुस्तक में झूठे भविष्यवक्ता वेश्या जेज़ेबेल जैसी महिलाओं के बराबर बताया।

यह राजाओं की पुस्तक की पुरानी इज़ेबेल के समान है, जिसने राजा अहाब से विवाह किया, पैगंबर एलिजा का विरोध किया, और भगवान बाल का एक उत्साही अनुयायी बन गया। जेफ्री ने महिलाओं को चर्च में बोलने या पढ़ाने से मना किया, 2 तीमुथियुस 3.6 का हवाला देते हुए, उन्हें दुखी छोटी महिलाओं के रूप में वर्णित किया, जो पापों से बोझिल, जिज्ञासु और वाचाल, आगे बढ़ने वाली, बेशर्मा और निर्लज्ज हैं, जो अन्य लोगों के घरों में प्रवेश करती हैं। उन्होंने मरियम, यीशु की माँ की पहचान की, जो अपने दिल में सब कुछ चुपचाप रखती थी, नारीत्व का आदर्श मॉडल थी।

फॉन्टकौड के बर्नार्ड ने मैरी को नारीत्व का आदर्श मॉडल बताया। 1180 के दशक से लेकर 1190 के दशक की शुरुआत तक, उन्होंने वाल्डेन्सियन महिला प्रचारकों के खिलाफ बड़े पैमाने पर लिखा, जिसमें किसी भी अनधिकृत आम आदमी के प्रचार के खिलाफ चर्च के कानून का हवाला देते हुए पुजारी के पद की अवज्ञा की। उन्होंने कहा कि उन अपराधियों को मसीह विरोधी माना जाना चाहिए और सार्वजनिक रूप से उनसे दूर रहना चाहिए।

वाल्डेन्सियनों द्वारा कई धर्मग्रंथों का हवाला देते हुए महिलाओं के प्रचार करने के अधिकार की पुष्टि की गई, जैसे कि ल्यूक 2, 36-38 में अन्ना पैगंबर, यीशु के खतने पर, वाल्डेन्सियनों द्वारा महिला प्रचारकों की वकालत करने के लिए उद्धृत किया गया। बर्नार्ड ने खंडन में लिखा कि अन्ना मंदिर में भविष्यवाणी कर रही थी और प्रचार नहीं कर रही थी, और किसी तरह उसने दोनों के बीच अंतर किया। 13वीं शताब्दी में वाल्डेन्सियनों के खिलाफ उत्पीड़न तेजी से बढ़ा।

13वीं शताब्दी में यात्रा मुख्य रूप से व्यापारियों, टूबाडोर, सेल्समैन और महिलाओं द्वारा की जाती थी, जिनका सड़क पर कोई काम नहीं था। 13वीं शताब्दी के मध्य तक, महिला प्रचारकों का उत्पीड़न इतना आम हो गया था कि दबाव के कारण वाल्डेन्सियन महिलाओं को कम सार्वजनिक लेकिन फिर भी समान रूप से गतिशील मंत्रालय के रूप में अपने विश्वास को व्यक्त करने के

लिए मजबूर होना पड़ा। पूरा वाल्डेन्सियन समुदाय इस मान्यता पर आ गया कि उनके पुरुषों के लिए सार्वजनिक स्थानों पर बिना किसी संदेह के प्रचार करना कहीं अधिक आसान था क्योंकि वे सुसमाचार की घोषणा करने के अपने प्राथमिक उद्देश्य को छिपाने के लिए नाई, चिकित्सक, फेरीवाले, शिल्पकार के रूप में काम कर सकते थे।

वाल्डेन्सियन महिलाओं के खिलाफ हिंसक उत्पीड़न के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, उन्होंने ऐसी भूमिकाएँ निभानी शुरू कर दीं जो बाहरी दुनिया के लिए कम दिखाई देती थीं लेकिन शिष्यों के समुदाय के रूप में उनकी गवाही के लिए हर तरह से ज़रूरी थीं। हमने पहले ही सोरोरिटीज़ की भूमिका का उल्लेख किया है। जैसे-जैसे समय बीतता गया, इनमें से कई धर्मशालाओं में, सोरोरिटीज़ ने यात्रा करने वाले मंत्रियों की तैयारी के लिए भी आवास प्रदान किए और वाल्डेन्सियन सेमिनरी और स्कूलों की शुरुआत की।

यह भागीदारी भूमिका वाल्डेन्सियन समुदाय के विश्वास की गवाही के लिए अपरिहार्य थी और जब तक वाल्डेन्सियन 1530 के दशक तक पादरी भेजते रहे, तब तक यह महत्वपूर्ण रही। तो यह उस उपदेश का पूरक है जो मैंने अभी कुछ क्षण पहले दिया था, और मुझे लगा कि इसे जोड़ना अच्छा हो सकता है क्योंकि यह उस समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में अधिक जानकारी देता है।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 7 है, सत्य की ओर वापस लौटना, महिला प्रचारक।